अरब आक्रमण

अरब भारत पर पहले मुस्लिम आक्रमणकारी थे। अरब आक्रमण के समय सिन्ध की राजधानी **'अलोर'** (वर्तमान रोहेरा) व राजा **दाहिर** था। दाहिर के पिता का नाम **चच** था। चच ने सिन्ध के राय व"ा के शासक राय साहसी द्वितीय की हत्या कर गद्दी हथिया ली। चच **ब्राह्मण** था। 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व वाली अरब सेना ने दाहिर को परास्त कर **रावर के युद्ध** में मार डाला। दाहिर की मृत्यु के बाद उसकी विधवा **रानीबाई ने** रावर की दुर्ग की रक्षा की। कड प्रतिरोध के बाद रानी ने जौहर किया। भारतीय इतिहास में पहली बार **जौहर** का उल्लेख हुआ है। मुहम्मद बिन कासिम को अल हज्जाज, जो कि इराक का गवर्नर था, ने सिन्ध पर आक्रमण हेतु भेजा। इस समय **खलीफा वालिद था।** सिन्ध पर आक्रमण का तात्कालिक कारण यह था कि समुद्री डाकुओं ने श्रीलंका जा रहे जहाजों की लूट लिया। यह घटना देवल में थट्टा के पास सिन्ध के समुद्री किनारे पर हुई। दाहिर ने न तो डाकुओं को नियन्त्रित किया व न हर्जाना दिया। सिन्ध की **व्यापारिक महत्ता** भी आक्रमण का महत्वपूर्ण कारण था।

बिलादूरी की पुस्तक '**किताब–फुतूल–अल–बलदान**' जो कि 9वीं शताब्दी की रचना है में सिन्ध पर आक्रमण की जानकारी मिलती है। अरबों ने **ऊँट पालन** व **खजूर की खेती** का प्रचलन किया। भारत में सर्वप्रथम **जजिया कर** की वसूली भी मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध में की। **चचनामा सिन्ध पर अरब आक्रमण का सर्वाधिक प्रामाणिक स्त्रोत है।** मूलतः यह पुस्तक मुहम्मद बिन कासिम के किसी **अज्ञात सैनिक/सेवक** द्वारा **अरबी** में लिखी गई। बाद में चचनामा को **मुहम्मद अली बिन अबु वक कुफी** ने नासिरूद्दीन कुबाचा के समय फारसी में अनुवादित किया। **कलिला व दिम्ना पंचतन्त्र** का अरबी अनुवाद है। **ब्रह्मसिद्धान्त (ब्रह्मगुप्त द्वारा रचित) एवं खण्डनखण्डखाद्यक नामक** संस्कृत पुस्तकों का अरबी में अनुवाद जल जाफरी ने किया। खलीफा मंसूर के समय इन पुस्तकों को विद्वान आठवीं सदी में बगदाद ले गये। **अरबों ने दिरहम नामक सिक्के को सिन्ध में प्रचलित किया।** अरबों ने भारतीय अंको को अपनाया। **कासिम** ने ही भारत में ही पहली बार **जजिया कर** आरोपित किया था।

सिन्ध के बाद कासिम ने 713 ई. में **मुल्तान को जीता।** मुल्तान की जीत में अरबों को इतना सोना मिला कि **मुल्तान का नाम सोने का नगर** रख दिया। महम्मद बिन कासिम ने अपनी बहुजातीय सेना में **हिन्दुओं** को भी नियुक्त किया। अरबों ने सिन्धु नदी के तट पर '**महफूजा**' नामक नगर भी स्थापित किया। यह महत्वपूर्ण है कि भारत में अरबों का प्रथम आगमन **मालाबार तट (केरल) में** व्यापारियों के रूप में हुआ। अतः भारत में इस्लाम का प्रथम आगमन केरल में हुआ न कि सिंध में। अमीर खुसरो के अनुसार अरब खगोल शास्त्री **अबु मासर** ने दस वर्ष तक **बनारस** में खगोल शास्त्र का अध्ययन किया।

तुर्क आक्रमण- महमूद गजनवी

गजनी साम्राज्य की स्थापना **अल्पतगीत ने 962 ई. में की।** अलप्तगीन के गुलाम **सुबुक्तगीन** ने 977 ई. में **यामिनी वंश** की स्थापना को एवं गजनी की राजगद्दी पर बैठा। सुबुक्तगीन प्रथम तुर्की शासक था जिसने भारत पर आक्रमण किया एवं हिन्दू शाही शासक जयपाल को पराजित किया। **जयपाल को** महमूद के इतिहासकारों ने **ईश्वर का शत्रु** बताया है। काबुल और पंजाब में हिन्दू शाही राजव"ा का शासन था। इनकी राजधानी **उद्भाण्डपुर** थी इसे **वैहन्द भी** कहा जाता था। सुबुक्तगीन का पुत्र महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा एवं 1030 ई. तक शासक किया। महमूद ने भारत पर प्रथम आक्रमण हिन्दूशाही शासक **जयपाल पर 1000 ई.** में किया। जयपाल ने महमूद गजनवी से पराजित होने पर 1001 ई. में आत्मदाह कर लिया। शाही व"ा में जयपाल के बाद आनन्दपाल,त्रिलोचनपाल व भीमपाल उत्तराधिकारी हुये जिन्हे महमूद ने पराजित किया था।

महमूद गजनवी ने **अमीन–उल–मिल्लत** (मुसलमानों का संरक्षक) तथा **यामिन–उद्–दौला (साम्राज्य का दाहिना हाथ)** की उपाधियां बगदाद के खलीफा अल कादिर **बिल्लाह** से प्राप्त की। **महमूद** इस्लामी इतिहास में प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने **सुल्तान की उपाधि धारण की। सर हेनरी इलियट** के अनुसार महमूद ने 1000 ई. से 1027 ई. तक भारत पर 17 बार आक्रमण किये। महमूद के आक्रमण के समय सिन्ध व मुल्तान पर मुस्लिम शासन था। मुल्तान पर अब्दुल फतेह दाऊद नामक करमाथी ि"ाया संप्रदाय के अनुयायी का शासन था। महमूद ने मुल्तान पर 1004–05 ई. में आक्रमण किया, जो भारत पर चौथा आक्रमण था।

महमूद के कुछ प्रमुख अभियान :-

1. **नगर कोट (1008–09 ई.)** – छठा अभियान
2. **थानेश्वर की लूट (1012–13 ई.)** – 9वॉं अभियान
3. **मथुरा व कन्नौज (1016 से 1018 ई.)** – 12वॉं अभियान
4. **सोमनाथ (गुजरात) (1025 ई.)**– 15वॉं अभियान

कृष्ण का जन्म होने के कारण मथुरा को **हिन्दुओं का बेथलहम** कहा जाता है। सोमनाथ के आक्रमण के समय गुजरात का शासक **भीम प्रथम** था। सिन्ध के जाटों (खोखर) के विरूद्ध 1027 ई. में महमूद ने भारत पर अन्तिम आक्रमण किया। महमूद ने लाहौर व मुल्तान सहित पंजाब को गजनी साम्राज्य में मिला लिया। महमूद व उसके उत्तराधिकारी **मसूद** ने हिंदूओं को बडी संख्या में रोजगार दिया। इनमें **सेवन्दराय** और **तिलक** के नाम प्रमुख हैं जो उच्च पदों पर नियुक्त किये गये। **''महमूद के भारत आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य धन लूटना था न कि इस्लाम का प्रचार–प्रसार।''** **उतबी** एकमात्र इतिहासकार था जिसने महमूद के भारत पर आक्रमणों का वर्णन किया है, किन्तु उतबी महमूद गजनवी के अभियानों में उसके साथ भारत नहीं आया। महमूद गजनवी के दरबार में **अलबरूनी, बेहाकी, उतबी, फिरदौसी एवं उंसारी,** जैसे कवि व विद्वान थे। अलबरूनी की **किताबुल हिन्द** तत्कालीन इतिहास का महत्वपूर्ण स्त्रोत है इसमें भारतीय भूगोल, विज्ञान, गणित, इतिहास, खगोल व दर्शन का वर्णन है।

अलबरूनी पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान था। **फिरदौसी** को महमूद ने प्रत्येक छन्द की रचना के लिए एक सोने की मुहर देने का वायदा किया किन्तु बाद में मना कर दिया। दरबार में अपमानित किये जाने के कारण फिरदौसी ने आत्महत्या कर ली। फारसी में फिरदौसी ने **शाहनामा** की रचना की। फिरदौसी को पूर्व का होमर कहा जाता है। **उतबी** ने **तारीखे यामिनी** की रचना इसे **किताबुल–यामिनी** भी कहा जाता है। सुबुक्तगीन क दरबारी कवि **बैहाकी** ने **''तारीख–ए–सुबुक्तगीन''** की रचना की। **बैहाकी महमूद** गजनवी के दरबार में भी थे। बैहाकी को लेनपूल ने **पूर्व का पेप्स** की उपाधि दी। महमूद के आक्रमणों का स्थायी परिणाम यह हुआ कि **पंजाब तुर्को के नियन्त्रण में चला गया।**

महमूद द्वारा ध्वस्त सोमनाथ के शिव मन्दिर का निर्माण 1026 ई. में चालुक्य शासक **भीमपाल प्रथम** तथा 1196 ई. में **कुमार पाल** ने करवाया। **अहिल्या बाई होल्कर** ने 1765 ई. में तथा **सरदार वल्लभ भाई पटेल** ने 1950 ई. में सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया। महमूद क विरूद्ध चन्देल शासक **विद्याधर** ने राजाओं का एक संघ बनाया था। महमूद को बुतशिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता है। लाहौर में गजनवी वंश का अन्तिम शासक **खुसरव मलिक** था जिसे मुहम्मद गोरी ने कैद कर 1192 ई. में मार दिया।

मुहम्मद गौरी (मुइज्जुद्दीन मुहम्मद बिन साम)

गोरी साम्राज्य का केन्द्र उत्तरी–पश्चिमी अफगानिस्तान था। 1155 ई. में गोर के अलाउद्दीन हुसैन ने गजनी पर आक्रमण कर उसे बुरी तरह लूटा और पूर्णतः जलाकर नष्ट कर दिया इसलिए उसका नाम **जहॉ–सोज (विश्व का जलाने वाला)** पड गया। शंसबनी वंश के मुहम्मद गोरी का भारत पर प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर हुआ। यहां करमाथी मुसलमान शासन कर रहे थे। 1178 ई. में गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया पर **मूलराज द्वितीय** के हाथों **माउन्ट आबू के युद्ध** में पराजित हुआ। यह भारत में मुहम्मद गोरी की पहली पराजय थी। 1191 ई. में **तराइन के प्रथम युद्ध** (थानेश्वर के पास– सरस्वती नदी के किनारे) में **पृथ्वीराज चौहान तृतीय** ने **गोरी को** परास्त किया। तराइन के दूसरे युद्ध से पहले मुहम्मद गोरी ने **क्विाम–उल–मुल्क** नामक दूत को पृथ्वीराज चौहान के पास गोरी की अधीनता स्वीकार करवाने के लिए भेजा। **तराइन के दूसरे युद्ध (1192 ई.)** में पृथ्वीराज चौहान मुहम्मद गोरी से पराजित हुआ। हसन निजामी ने ताजुल मासिर में लिखा है कि **''पृथ्वीराज को कैद कर अजमेर ले जाया गया जहां उसने गोरी के अधीनस्थ कुछ वर्षो तक शासन किया।''** मिन्हाज के अनुसार पृथ्वीराज की मृत्यु सिरसा (सरसुती) में हुई। तराइन का दूसरा युद्ध भारतीय इतिहास का निर्णायक युद्ध था। इस युद्ध के बाद उत्तरी भारत के तुर्की सत्ता की स्थापना हुई। मुहम्मद गोरी ने 1194 ई. में **चन्दावर के युद्ध** में कन्नौज के शासक जयचन्द्र को पराजित किया।

मुहम्मद गोरी के सिक्को पर एक तरफ कलिमा खुदा रहता था तथा दूसरी तरफ **लक्ष्मी** की आकृति अंकित रहती थी। कुछ सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अव्यक्तमेक मुहम्मद अवतार भी लिखा रहता था। इन सिक्को को **देहलीवाल सिक्के** कहा जाता था। **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** मुहम्मद गोरी के साथ 1192 ई. में भारत आय व अजमेर बस गये। **दिल्ली 1193** ई. में भारत में गोरी साम्राज्य की राजधानी बनी। इससे पहले कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1192 ई. में दिल्ली के निकट **इन्द्रप्रस्थ** को राजधानी बनाया। ऐतिहासिक दृष्टि से दिल्ली का संस्थापक **अनंगपाल तोमर (11वीं सदी)** को माना जाता है। पृथ्वीराज रासो में इसे दिल्ली या ढिल्लि"ा कहा गया है। 1276 ई. के पालम बावली अभिलेख में इसे दिल्ली का एक और नाम **योगिनीपुर** मिलता है।

1206 ई. में गोरी की हत्या सिन्धु नदी के तट पर **दमयक** नामक स्थान पर नमाज पढते समय ि"या तथा **हिन्दू खोक्खर विद्रोहियों** ने कर दी।

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.)

गुलाम वंश (1206 से 1290 ई.)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को तराइन के दूसरे युद्ध के बाद 1192 ई. में भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त कराया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद **लाहौर** में स्थानीय नागरिकों के अनुरोध पर सत्ता ग्रहण की व लाहौर को ही राजधानी बनाकर मृत्युपर्यन्त वहीं रहा।

1206 से 1290 ई. तक का समय गुलाम वंश काल माना जाता है। कुतुबुद्दीन ऐबक को छोडकर गुलाम वंश के सभी शासक तुर्की की **इल्बारी जनजाति** से संबंधित थे। 1206–90 ई. तक तीन राजव"ाों के नौ शासकों ने शासन किया। ये व"ा **कुतुबी वंश (1206–11) शम्सी वंश (1211–66 ई.) एवं बल्बनी वंश (1266–90 ई.) थे।** इन तीनो वंशों के संस्थापक बचपन में गुलाम थे किन्तु सुल्तान बनने से पूव वे दासता से मुक्त हो चुके थे अतः इसे गुलाम वंश कहना अनुचित होगा।

इतिहासकार हबीबुल्लाह ने इसे '**मामूलक**' कहा ह मामलूक अरबी भाषा का शब्द जिसका अर्थ है– स्वतन्त्र माता–पिता से उत्पन्न हुये दास। ऐबक को नि"ाापुर के काजी फखरूद्दीन ने दास के रूप में खरीदा। कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में **तुर्की राज्य का संस्थापक** माना जाता है। वह दिल्ली का प्रथम तुर्क शासक था। ऐबक ने सुल्तान की उपाधि ग्रहण की बल्कि '**मलिक**' **और 'सिपहसालार'** की उपाधि ही रखी। उसने न अपने नाम का खुतबा पढा और न सिक्के चलाये। इसी कारण उसे दिल्ली का स्वायत्त सुल्तान नही माना जा सकता। गोरी के उत्तराधिकारी ग्यासुद्दीन महमूद ने उसे सुल्तान स्वीकार किया व 1209 ई. में उसे दासता से मुक्त किया। अतः वह भारत का शासक बनने के समय तकनीकी रूप से गुलाम था। ऐबक की उदारता व दान"ाीलता के लिये उसे **लाखबख्श** कहा गया। कुरान का अत्यन्त सुरीली आवाज में पाठ करने के कारण कुतुबुद्दीन ऐबक को '**कुरान खॉ**' भी कहा जाता था उसे **हातिम द्वितीय** भी कहा जाता था। **हसन निजामी (ताज–उल–मासिर का लेखक)** व **फख–ए–मुदब्बिर (अदब–उल–हर्ब का लेखक)** को ऐबक ने संरक्षण दिया। दिल्ली में **कुतुबमीनार** की नींव प्रसिद्ध सूफी सन्त "**ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी**" के नाम पर कुतुबुद्दीन ऐबक ने रखी। इसका निर्माण कार्य इल्तुतमि"ा ने पूरा किया। कुतुबमीनार का प्रयोग आरम्भ में **अजान** के लिए किया जाता था। ऐबक के एक अधिकारी **इख्तियारूद्दीन मुहम्मद बीन बख्तियार खलजी** ने बिहार और बंगाल पर भी आक्रमण किये उसने **नालन्दा विश्वविद्यालय** को नष्ट कर हजारों दुर्लभ पांडुलिपियां जला दी। इस समय बंगाल में पाल व"ा का शासक **लक्ष्मण सेन व राजधानी नदिया** थी। बख्तियार खलजी ने नदिया पर आक्रमण किया व लखनोती को अपनी राजधानी बनाया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी पुत्री का विवाह **इल्तुतमिश से किया** व इल्तुतमि"ा को सर–ए–जांदार व अमीर–ए–ि"ाकार का पद दिया। ऐबक ने गजनी के शासक याल्दौज की पुत्री से स्वयं विवाह किया जबकि अपनी बहन का विवाह सिंध के नसिरूद्दीन कुबाचा से कराया।

ऐबक ने दिल्ली में किला **राय पिथौरा** के निकट शहर बसाया। यह मध्यकाल में निर्मित दिल्ली के सात शहरों में प्रथम था। **अजमेर** के निकट कुतुबुद्दीन ऐबक ने चौहान सम्राट विग्रहराज चतुर्थ द्वारा बनाये गये संस्कृत विश्वविद्यालय को तोड कर **अढाई दिन का झोपडा** नामक मस्जिद बनाई। इस इमारत पर संस्कृत नाटक **हरिकेलि** के कछ अं"ा अंकित है उसने **दिल्ली** में **कुब्बत–ए–इस्लाम** मस्जिद भी बनवाई। ऐबक की मृत्यु 1210 ई. में लाहौर में **चौगान** (पोलो) खेलते समय घोडे से गिर जाने के कारण हुई। ऐबक को **लाहौर** में दफनाया गया। कुतुबुद्दीन की मृत्यु के बाद उसके **पुत्र आरामशाह** को गद्दी से हटाकर इल्तुतमि"ा सुल्तान बना। आराम"ाह ने केवल आठ माह तक शासन किया।

शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36 ई.)

इल्तुतमि"ा इल्बारी तुर्क था उसे दिल्ली सल्तनत का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है। कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के समय वह **बदायूँ** का सूबेदार था। **इल्तुतमिश** ने सर्वप्रथम लाहौर के स्थान पर **दिल्ली** को **राजधानी** बनाया। 1229 ई. में उसने बगदाद के अब्बासी खलीफा अल मुसतनसिर बिल्लाह मन्सूर से धार्मिक व राजनैतिक मान्यता का अधिकार पत्र प्राप्त किया व उसके नाम के सिक्के चलाये। जिससे दिल्ली सल्तनत को औपचारिक मान्यता प्राप्त हुई। उसे हिन्दुस्तान के सुल्तान एवं **नासिर अमिर उल मौसनीन** की उपाधि प्रदान की। तबकाते नासिरी में इसका वर्णन करते हुए मिन्हाजुद्दीन सिराज कहता है कि "**इस्लाम की राजधानी (बगदाद) से भेजे गये वस्त्र, आभूषण और उपहार को सुल्तान, उसके पुत्र अमीरों आदि ने ग्रहण किया।**" अतः इल्तुतमि"ा **दिल्ली सल्तनत का प्रथम** वैधानिक और संप्रभुता सम्पन्न सुल्तान बना। इल्तुतमि"ा ने अपने चालीस वफादार गुलामों का समूह तैयार किया जिसे बरनी ने **चालीसा** या '**तुर्कान–ए–चहलगनी**' कहा है।

इल्तुतमि"ा ने 1221 ई. में नवोदित सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचाया जब **चंगेज खॉ** ख्वारिज्म के शाह **जलालुद्दीन मांगबरनी** का पीछा करता हुआ सिन्धु नदी तक आ गया। तब इल्तुतमि"ा ने मांगबरनी को शरण देन से मना कर बुद्धिमता का परिचय दिया। चंगेज खॉ का मूल नाम **तिमूचिन** था। वह अपने को **ईश्वर का अभिशाप** कहने में गर्व अनुभव करता था।

1215 ई. मे **तराईन के तीसरे युद्ध** में इल्तुतमि"ा ने **ताजुद्दीन यल्दौज** को पराजित कर बन्दी बना लिया और बदायूँ के दुर्ग में उसका वध करवा दिया। इल्तुतमि"ा ने नासिरूद्दीन कुबाचा को 1227–28 ई. में पराजित कर मुल्तान व सिन्ध को जीत लिया। कुबाचा सिन्ध नदी में डूबकर मर गया। इल्तुतमि"ा के सबसे बडे पुत्र **नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु 1229 ई.** में ही हो गई थी। उसकी स्मृति में इल्तुतमि"ा ने **मदरसा ए नासिरी** का दिल्ली में निर्माण करवाया। उसने **इक्ता प्रणाली** विकसित की। इक्ता स्थानान्तरणीय भू–भाग का राजस्व अधिन्यास था जो नकद वेतन के बदले दिया जाता था। इक्ता व"ाानुगत नहीं थे। इल्तुतमि"ा ने मुद्रा व्यवस्था में भी सुधार किया। वह पहला तुर्क शासक था जिसने **शुद्ध अरबी सिक्के** चलाये। सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परम्परा शुरू की। इल्तुतमि"ा ने **चांदी का टंका (175 ग्रेन)** एवं **तांबे का जीतल** भी प्रारम्भ किया।

इल्तुतमि"ा ने 1234–35 ई. में **भिलसा में हिन्दू मन्दिर** व **उज्जैन के महाकाल मंदिर** को लूटा। इल्तुतमि"ा ने नागौर (राजस्थान) में अतारकिन का दरवाजा बनवाया। इब्नबतूता लिखता है कि इल्तूतमि"ा के महल के सामने संगमरमर के दो सिंह बने थे जिनके गले में घंटिया लटकी होती थी जिन्हे खीचने पर फरियादी को तुरन्त न्याय मिलता था। बनियान आक्रमण पर जाते समय इल्तुतमि"ा बीमार पडा व दिल्ली लौट आया किन्तु दिल्ली में **29 अप्रैल, 1236 ई.** को उसकी मृत्यु हो गई।

इल्तुतमि"ा ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी चुना व ग्वालियर विजय के बाद चॉदी के टंके पर रजिया का नाम अंकित करवाया। अमीरो ने इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसके पुत्र **रूकनुद्दीन फिरोज शाह** को गद्दी पर बैठाया। इल्तुतमि"ा ने सुल्तान के पद को व"ाानुगत किया। रूकनुद्दीन के समय वास्तविक सत्ता उसकी **मॉ शाह तुर्कान** के हाथों में थी। लोगों ने रूकनुद्दीन को अपदस्थ कर रजिया को सुल्तान बनाया। रजिया ने शुक्रवार की नमाज के समय **लाल वस्त्र** पहन कर लोगों से शाह तर्कान के विरूद्ध मदद मांगी। लोगों ने रूकनुद्दीन को अपदस्थ कर रजिया को सुल्तान बनाया। रूकनुद्दीन मात्र सात माह शासक रहा। रजिया के मामले में पहली बार दिल्ली की जनता ने उत्तराधिकार के प्र"न पर स्वयं निर्णय लिया।

रजिया (1236-1240 ई.)

रजिया को लोगों का समर्थन था परन्तु बदायूं मुल्तान, हांसो व लाहौर के गवर्नर उसके विरोधी थे। इल्तुतमि"ा के समय वजीर निजामुल मुल्क अन्य विरोधिया में मलिक अलाउद्दीन जानी, कबीर अयाज खॉ, पलिक इजुद्दीन सलारी एवं मलिक सैफद्दीन कूची थे। रजिया के विरूद्ध पहला विद्रोह लाहौर के गवर्नर कबीर **अयाज खॉ** ने किया।

रजिया ने पर्दा त्याग कर पुरूषों के समान **कुबा (कोट) व कुलाह (टोपी)** पहनकर दरबार में आना शुरू किया। रजिया ने अबीसीनियाई हब"ाी **जलालुद्दीन याकूत** को **अमीरे आखूर** (अश्व"ाला का प्रधान) के पद पर नियुक्त किया। ऐतगीन को बदायूं का एवं अल्तूनिया को भटिण्डा (तबरहिन्द) का इक्तादार नियुक्त किया। **ऐतगीन** को **अमीर हाजिब** भी बनाया। अल्तुतनिया ने विद्रोह कर दिया एवं अमीरों ने रजिया के भाई बहराम शाह को गद्दी पर बैठाया। रजिया ने अल्तुतनिया से विवाह कर चतुराई से उसे अपनी ओर मिला लिया किन्तु रजिया बहराम शाह से पराजित हुई एवं मार्ग में डाकुओं ने रजिया व अल्तुतनिया की अक्टूबर, 1240 में **कैथल (दिल्ली)** के पास हत्या कर दी। इतिहासकार रजिया की असफलता का कारण गुलाम सरदारों की महत्वाकांक्षा एवं रजिया का महिला होना मानते है। रजिया ने अपने सिक्कों पर "**उमदत–उल–निस्वां**" **का विरूद्ध धारण किया।** रजिया ने बलबन को **अमीर–ए–शिकार** का पद दिया।

मुइनुद्दीन बहराम शाह (1240-1242 ई.)

बहराम शाह ने **नायब–ए–मुमलकत** के पद का सृजन किया। **इख्तयारुद्दीन एतगीन** प्रथम नायब बना। अब सत्ता के तीन केंद्र हो गये। सुल्तान, नायब और वजीर। इसके शासन काल में 1241 ई. में लाहौर पर मंगोल आक्रमण हुआ। बहराम शाह ने बलवन को हांसी व रेवाड़ी की जागीर दी।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-1246 ई.)

यह रुकनुद्दीन फिरोज शाह का पुत्र था। इसने सारी शक्तियॉ चालीसा को सौंप दी एवं नाम मात्र का सुल्तान रहा। उसने बलवन को अमीर–ए–हाबिज नियुक्त किया।

नासिरुद्दीन महमुद (1246-1265 ई.)

यह इल्तुतमि"ा का पुत्र था। बलवन के सहयोग से समूद शाह को गद्दी से हटाकर सुल्तान बना। यह धार्मिक स्वभाव का था व खालो समय में कुरान की नकल करता था एवं उसकी प्रतिया तथा टोपी सिलकर अपना गुजारा चलाता था। बलवन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन से किया। इस समय वास्तविक शक्ति बलवन के हाथों में थी। उसने 1249 ई. में बलवन को **उलुग खॉ** की उपाधि प्रदान की एवं **नायब–ए–मुमकत** नियुक्त किया। 1253 ई. में भारतीय मुसलमानों का नेता इमादुद्दीन रेहान बलवन के स्थान पर नायब बना। 1254 ई. में बलवन पुनः नायब बना। नासिरुद्दीन अपनी साधारण आदतों के कारण दरवे"ा राजा के नाम से जाना जाता था। 1265 ई. में नासिरुद्दीन की मृत्यु के बाद बलवन सुल्तान बना।

बलवन (1265-1287 ई.)

बलवन का मूल नाम **बहाउद्दीन** था उसे मुंगोलों ने ख्वाजा जमालुद्दीन को बेच दिया। बलवन भी इल्बारी तुर्क था। बलवन का राजत्व सिद्धांत **लौह एवं रक्त नीति** तथा **प्रतिष्ठा, शक्ति व न्याय** पर आधारित था। उसके अनुसार सुल्तान संसार में ई"वर का प्रतिनिधि (**नायब–ए–खुदाई**) है और पैगम्बर के बाद सुल्तान का स्थान है। बलवन ने अपने पुत्र बुगरा खॉ को कहा कि राजा में देवत्व का अं"ा होता है। उसकी समानता कोई मनुष्य नही कर सकता। **बरनी** ने **तारीख–ए–फिरोजशाही** में बलवन के राजत्व सिद्धांत की विस्तृत विवेचना की है। सुल्तान की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये बलवन ने **चालीसा** का दमन बड़े क्रूर तरीके से किया। बदायूँ के गवर्नर बकबक को जनता के सामने कोडों से पिटवाया, अवध के शासक हैवात खॉ के भी 500 कोड़े लगवाये तथा बंगाल से तुगरिल से से पराजित होने पर अवध के शासक अमीन खॉ को अयोध्या के फाटक पर लटकवा दिया।

बलबन ने स्वयं को फिरदौसी के शाहनामा से वर्णित **अफरासियाब का** वंशज माना एवं शासन को ईरानी आद"ार् के आधार पर व्यवस्थित किया। बलबन ने सैनिक सेवाओं के बदले दी हुई जागीरों की जॉच कराई एवं अयोग्य सैनिकों को पें"ान देकर सेवा मुक्त किया। बलबन के समय वजीर का महत्व घट गया व नाइब का पद समाप्त हो गया। सामन्तों की गतिविधियों पर नजर रखने हेतु **गुप्तचर विभाग (दीवान–ए–बरीद)** की स्थापना की। पहली बार बलबन ने ही गुप्तचर विभाग की स्थापना की। बलबन ने **दीवाने अर्ज** (सैन्य विभाग) की स्थापना की व **इमाद–उल–मुल्क** को सेनाध्यक्ष नियुक्त किया। अपनी प्रतिष्ठा बढाने के लिए दरबार में गैर इस्लामी प्रथाओं की शुरूआत की। जैसे **सिजदा (घुटने के बल बैठकर सुल्तान के समक्ष सिर झुकाना)** और **पायबोस** (सुल्तान के पैर चुमना) जैसी ईरानी (फारसी) प्रथाएं एवं **नौरोज का त्यौहार** (ईरानी त्यौहार) मनाना आरंभ किया। अपने पौत्रों के भी कैकुबाद, कैखुसरों, कयूमर्स आदि ईरानी नाम रखे। मंगोल आक्रमण से बचने के लिए उत्तरी पि"चमी सीमा पर किलों की श्रंखला बनाई। बलबन ने सम्पूर्ण सीमान्त प्रदे"ा को दो भागों में विभाजित किया। **सुनम व समाना** के प्रान्त छोटे पुत्र बुगरा खॉ को तथा मुल्तान, सिन्ध व लाहौर को बड पुत्र मुहम्मद को सौंपे।

बलबन का बडा पुत्र मुहम्मद खॉ 1286 ई. में तैमूर खॉ के नेतृत्व में हुए मंगोल आक्रमण का सामना करते हुए मारा गया। शाहजादा मुहम्मद को बलबन ने **'शहीद'** की उपाधि दी। बलबन मुहम्मद की मृत्यु से टूट गया और एकान्त में फूट–फूट कर रोता था, हालांकि दरबार में वह गंभीर व्यवहार ही रखता था। अमीर खुसरो एवं अमीर हसन देहलवी (1253–1327 ई.) ने अपना साहित्यिक जीवन शाहजादा मुहम्मद के समय में शुरू किया। **अमीर हसन देहलवो** उच्च कोटि का गजल लेखक था कि जिसके कारण उसे "**भारत का सादी**" कहा गया है।

बलबन की मृत्यु के बाद उसका अयोग्य पौत्र कैकुबाद उत्तराधिकारी हुआ यद्यपि बलबन ने कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी चुना था। कैकुबाद को लकवा होने पर तुर्क अमीरों ने उसके ि"ा"ा पुत्र को **शमसुद्दीन कयूमर्स** के नाम से गद्दी पर बैठाया। अमीर हसन भी अमीर खुसरों की भॉति निजामुद्दीन औलिया के ि"ाष्य थे। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी जो कि आरिजे मुमालिक था, ने कैकुबाद व क्यूमर्स की हत्या कर गुलाम वं"ा को समाप्त कर दिया और खिलजी क्रान्ति का सूत्रपात किया। **क्यूमर्स** इस वंश का अंतिम शासक था।

बलबन ने 1279 ई. में **ख्वाजा** नामक अधिकारी को नियुक्त किया जो इक्तादारों पर नियंत्रण रखता था। बलबन ने इक्ता को अपने उत्तराधिकारियों को स्थानांतरित करने पर रोक लगा दी। बलबन साधारण व्यक्तियों से नही मिलता था। बलबन ने कहा था "**जब मैं किसी तुच्छ परिवार के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरे शरीर के प्रत्येक नाडी क्रोध से उत्तेजित हो जाती है।**" इतिहासकार बरनी लिखता है कि "**बलबन की मृत्यु से दुःखी हुए मलिकों ने अपने वस्त्र फाड डाले और सुल्तान के शव को कबिस्तान ले जाते हुए अपने सिरों पर धूल फेंकी व चालीस दिन तक बिना बिस्तर के जमीन पर सोये।**"

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

खिलजी क्रान्ति से तात्पर्य है– सत्ता पर तुर्की अमीर वर्ग के लिए एकाधिकार की समाप्ति। अब श्रेष्ठ पद जातीय व नस्लीय आधार पर नहीं अपितु योग्यता के आधार पर प्राप्त किये जा सकते थे।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.)

जलालुद्दीन कैकुबाद का आरिजे मुमालिक था। कैकुबाद ने उसे **शाहस्ता खॉ** की उपाधि दी। जलालुद्दीन ने **किलूखरी** से महल में अपना राज्याभिषेक करवाया। इसने ईरानी फकीर **सीदी मौला** को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। सीदी मौला सूफी सन्त शेख फरीदुद्दीन गज–ए–शंकर के ि"ाष्य थे।

जलालुद्दीन उदार प्रवृत्ति का सुल्तान था। विरोधियों के प्रति उसने दुर्बल नीति अपनाई। वह कहता था कि मुसलमानों का रक्त बहाने की उसकी आदत नहीं है। दक्षिण भारत में प्रथम मुस्लिम आक्रमण जलालुद्दीन के समय 1294 ई. में देवगिरि के शासक रामचन्द्रदेव पर अलाउद्दीन खिलजी के नेतृत्व में हुआ। जलालुद्दीन ने रणथम्भौर की घेरेबन्दी 1290 ई. में यह कहते हुये हटा ली कि वह मुसलमान के सिर के एक बाल की कीमत ऐसे 100 किलों से ज्यादा समझता है। जलालुद्दीन के भतीजे अलाउद्दीन ने उसका कडा में छलपूर्वक वध कर दिया। **ख्वाजा खातिर जलालुद्दीन के वजीर थे।** जलालुद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जो मानता था कि राज्य जनता

की इच्छा पर आधारित होना चाहिये। वह उदार निरंकु"ावादी था। **दीवाने वकूफ** नामक विभाग की स्थापना की। 1292 ई. में मंगाल हलाकू के पौत्र **अब्दुल्ला** ने भारत पर आक्रमण किया, किन्तु अब्दुल्ला पराजित हुआ।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

बलवन ने सल्तनत का सुदृढीकरण किया तो अलाउद्दीन के समय सल्तनत का साम्राज्यवादी युग आरम्भ हुआ। अलाउद्दीन का आरम्भिक नाम **अली गुरशास्प** था। वह 1290 ई. में अमीर–ए–तुजक बना। अलाउद्दीन कडा का सुबेदार था तथा स्वयं को कडा में ही सुल्तान घोषित कर दिया। उसने अपना राज्याभिषेक दिल्ली में बलबन के **लाल महल** में करवाया।

अलाउद्दीन खिलजी के काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुये। ये मंगोल आक्रमणकारी मध्य एशिया के मंगोल शासक दावा खॉ द्वारा भेजे गये थे।

मंगोल आक्रमण	वर्ष	नेता
प्रथम आक्रमण	1296 ई.	कादर खान
द्वितीय आक्रमण	1297–98 ई.	साल्दी
तीसरा आक्रमण	1209 ई.	कुतलुग ख्वाजा
चौथा आक्रमण	1303 ई.	तार्गी
पॉचवॉ आक्रमण	1305 ई.	अली बेग एवं तरकत
छठा आक्रमण	1306 ई.	कबक खा
सातवॉ आक्रमण	1307–08 ई.	इकबालमन्द

जफर खॉ मंगोलो के विरूद्व अलाउद्दीन का सेनापति था। जफर खॉ को मंगोलो की मौत कहा जाता था। जफर खॉ 1299 में मंगोल आक्रमण के दौरान मारा गया। **गुजरात आक्रमण** (1299 ई.) सुल्तान बनने के बाद अलाउद्दीन का प्रथम अभियान था। उलुग खॉ व नुसरत खॉ ने राजधानी अन्हिलवाडा (पाटन) को लूटा व बघेल शासक कर्ण की पत्नी कमला देवी भी आक्रमणकारियों के हाथ लगी। अलाउद्दीन ने **कमला देवी** से विवाह कर लिया। गुजरात दिल्ली सल्तनत का एक प्रान्त बन गया। करण ने अपनी पुत्री देवल देवी के साथ देवगिरि में शरण ली। **मलिक काफूर** अलाउद्दीन का दक्षिण अभियान का सेनापति था। वह गुजरात (कैम्बे) का रहने वाला था। 1299 ई. में गुजरात के बघेल शासक कर्ण के विरूद्ध अभियान में **मलिक काफूर** अलाउद्दीन को मिला। मलिक काफूर को अलाउद्दीन ने बाद में अपना मलिक नाईब एवं वजीर नियुक्त किया। खम्भात से अलाउद्दीन के सेना नायक खॉ ने हिन्दू से मुसलमान बनाये गये हिंजड़े दास मलिक काफूर को '**हजार दीनारी**' भी कहा जाता है।

अलाउद्दीन के राजस्थान अभियान-

विजित राज्य	वर्ष	पराजित शासक
रथथम्भौर	1301 ई.	हम्मीर देव
चित्तौड़	1303 ई.	राणा रतन सिंह
जालोर (जवालिपुर)	1311 ई.	कान्हड़देव

अलाउद्दीन के रणथम्भौर आक्रमण का उल्लेख जोधाराज के हम्मीररासो व नयनचन्द्र सूरी रचित हम्मीर महाकाव्य में मिलता है। **रणथम्भौर आक्रमण** का मुख्य कारण हम्भीर द्वारा अलाउद्दीन से असन्तुष्ट मंगोल सेनापति मुहम्मद शाह एवं केहब्रू को शरण देना माना जाता है। 1301 ई. में रणथम्भौर विजय के समय हुआ जौहर फारसी साहित्य में जौहर का पहला वर्णन है। **अमीर खुसरो** भी रणथम्भौर अभियान में उसके साथ था उसने

तारीख–ए–अलाई (खजाइन–उल–फुतुह) में इस जौहर का वर्णन किया है। इसमें हम्मीर की रानी रंगदेवी ने जौहर किया। रथथम्भौर अभियान में अलाउद्दीन का सेनापति **नुसरत खॉ** मारा गया।

अलाउद्दीन ने 1303 में चित्तौड को जीतकर इसका नाम अपने पुत्र खिज्र खॉ के नाम पर **खिज्राबाद** रखा। चित्तौड को इससे पूर्व किसी सुल्तान ने नहीं जीता था। अमीर खुसरों ने भी चित्तौड अभियान में हिस्सा लिया था। अपनी रचना **खजाइन–उल–फुतुह** में चित्तौड़ आक्रमण का वर्णन है। कहा जाता है कि यह आक्रमण चित्तौड़ के राजा रतनसिंह की पत्नो पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए किया गया था। 16वीं शताब्दी की अवधी रचना **पद्मावत** (मलिक मोहम्मद जायसी) में पद्मिनी का कथानक खजाइन–उल–फुतुह से लिया गया है। अमीर खुसरो ने खजाइन–उल–फुतुह में पद्मिनी प्रकरण का भी वर्णन किया है।

1305 ई. में अलाउद्दीन के सेनापति आइनउलमुल्क ने मालवा को जीता। **अमीर खुसरो** हिन्दी में कविता लिखने वाला प्रथम मुस्लिम कवि था। जालोर के शासक कान्हड़देव के विरूद्ध अपनी एक नौकरानी गुले बिहि"त के नेतृत्व में एक सेना भेजी।

अलाउद्दीन के दक्षिण अभियानों का क्रम –

अलाउद्दीन विंध्याचल को पार करने वाला प्रथम सुल्तान था। अलाउद्दीन ने 1292 ई. में ही मालवा पर आक्रमण कर भिलसा को जीत लिया। अलाउद्दीन के दक्षिण अभियानों का वणन अमीर खुसरो ने खजाइन–उल–फुतुह तथा बरनी ने तारीख–ए–फिरोज"ाही में विस्तार से किया है।

इस समय दक्षिण में चार प्रमुख राज्य थे –

राज्य	शासक
1. देवगिरि के यादव	रामचन्द्र देव
2. वारंगल (तेलंगाना) के काकतिय	प्रतापरूप देव द्वितीय
3. द्वारसमुद्र के होयसल	वीर बल्लाल तृतीय
4. मदुरा के पाण्ड्य	वीर पाण्ड्य

अलाउद्दीन ने 1303 ई. में दक्षिण का पहला आक्रमण वारंगल पर मलिक छज्जू के नेतृत्व में किया किन्तु तेलंगाना के शासक प्रताप रूद्र देव द्वितीय ने छज्जू को परास्त किया। प्रताप रूद्र देव द्वितीय को मुस्लिम इतिहासकारों ने लहर देव कहा है। 1306–07 ई. में अलाउद्दीन ने देवगिरि पर दक्षिण का पहला सफल आक्रमण मलिक काफूर के नतृत्व में किया। देवगिरि के शासन रामचन्द्र देव ने अलाउद्दीन को एलिचपुर की आय भेजने का वचन दिया।

अलाउद्दीन ने रामचन्द्र को रायरायन उपाधि और चॅदोबा देकर सम्मानित किया। अलाउद्दीन ने 1313 ई. में देवगिरि पर पुनः आक्रमण किया तथा रामचन्द के पुत्र शंकर देव को परास्त कर मार डाला। 1308 ई. में तेलंगाना पर दूसरे आक्रमण में मलिक काफूर ने प्रताप रूद्र देव को पराजित किया। प्रताप रूद्र देव ने काफूर को **कोहिनूर हीरा** दिया।

1310 ई. में मलिक काफूर ने होयसल राज्य पर आक्रमण किया व वीर बल्लाल तृतीय ने अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार की। बल्लाल तृतीय ने मदुरा विजय के समय अलाउद्दीन की सहायता भी की। 1311 ई. में मदुरा के पाण्ड्य (माबर) राज्य पर आक्रमण किया। काफूर ने मदुरा पर आक्रमण कर काफी धन लूटा व रामे"वर के मंदिर को नष्ट कर मस्जिद बनाई। पाण्ड्य राजाओं ने न तो अलाउद्दीन की अधीनता स्वीकार की। इस प्रकार मदुरा (मदुरै) के खिलाफ सैनिक अभियान राजनैतिक दृष्टि से असफल रहा। अलाउद्दीन ने **सिकन्दर सानी** या **दूसरे सिकन्दर** की उपाधि धारण की व इसे सिक्कों पर अंकित करवाया। अलाउद्दीन ने धर्म की स्थापना व वि"व विजय करना चाहता था परन्तु अपने मित्र दिल्ली के कोतवाल अलाउल मुल्क की सलाह पर ये योजनाऍ त्याग दी।

अलाउद्दीन के समय हुए विद्रोह – अलाउद्दीन के काल में बहुत से विद्रोह हुए इनका क्रम था :– नवीन मुसलमानों का विद्रोह, अकत खॉ का विद्रोह, अवध के सुबेदार मंगू खॉ व बदायूँ के सूबेदार मलिक उमर का विद्रोह, 1308 ई. में हाजी मौला का विद्रोह आदि।

पहला विद्रोह उन मंगलो का था जो जलालुद्दीन खिलजी के समय इस्लाम में परिवर्तित हुए एवं नवीन मुसलमान कहलाये। इन नवीन मुसलमानों ने 1299 में गुजरात से नुसरत खॉ के नेतृत्व में लौट रही अलाउद्दीन की सेना में अचानक विद्रोह कर दिया तथा अलाउद्दीन के एक भतीजे तथा नुसरत खॉ के भाई को मार दिया।

विद्रोह के दमन हेतु चार अध्यादेश :–

1. अमीरो की संपत्ति, धार्मिक व भूमि अनुदान जब्त करना
2. गुप्तचर प्रणाली का गठन
3. दिल्ली में मद्य निषेध
4. अमीरो की आपसी मेल–मिलाप और उत्सवों पर रोक व आपसी विवाह से पूर्व सुलतान से अनुमति लेना जरूरी।

अलाउद्दीन का राजस्व सिद्धान्त

अलाउद्दीन देवी शक्ति पर आधारित राजत्व में विश्वास नहीं करता था बल्कि वह ऐसे राजस्व में वि"वास करता था जो स्वयं अपने अस्तित्व द्वारा अपना औचित्य सिद्ध कर सके। अलाउद्दीन के राजत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन अमीर खुसरो ने किया। **अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने धर्म को राजनोति से पृथक कर दिया** उसने खलीफा को मान्यता दी एवं **यामिन–उल–खलीफा नासिरी–अमीर उल मुमनिन** (खलीफा का नायक) की उपाधि ग्रहण की किन्तु प्र"ासन में खलीफा के हस्तक्षेप को स्वीकार नही किया और न ही खलीफा से कभी अधिकार पत्र के लिए आवेदन किया। अलाउद्दीन निरंकु"ा राजतंत्र में वि"वास करता था वह उलेमा वर्ग की सलाह नही लेता था तथा अपने स्वविवेक से राज्यहित में निर्णय लेता था। उसके बयाना के काजी **मुगीसुद्दीन** को कहा कि **''यद्यपि मुझे कोई ज्ञान नही है और न ही मैने कोई पुस्तक पढी है फिर भी मैं जन्म से मुसलमान हूँ।..... .मै ऐसे आदेश देता हूँ जो राज्य के लिए हितकर होते है और परिस्थिति देखते हुए तर्क संगत दिखाइ देते है। मैं यह नही जानता कि शरीअत में उनकी अनुमति है या नहीं। मै नही जानता कि न्याय के दिन अल्लाह मेरे साथ कैसा व्यवहार करेगा।''**

अलाउद्दीन ने स्वयं को **जिल्ले इलाही** घोषित किया। लुई चौदहवे के समान अलाउद्दीन ने कहा कि राजा का कोई संबंध नही होता। खिलजी व"ा के किसी सुल्तान ने खलीफा से अपने पद की स्वीकृति नही ली।

प्रशासनिक सुधार – अलाउद्दीन ने व्यापारियों पर नियंत्रण व बाजार सुधार के लिए **दीवाने रियासत** नामक नवीन विभाग की स्थापना की। **बरीद–ए–मुमालिक** नामक अधिकारी के अधीन गुप्तचर प्रणाली का पुर्नगठन किया। बरीद के अतिरिक्त **मुनहियन** या मुन्ही नामक अनेक सूचनादाता भी नियुक्त किये।

सैन्य सुधार – सेना का केन्द्रीयकरण किया व सैनिकों को **नकद वेतन** देना शुरू किया। **घाडे दागने** की प्रथा व सैनिकों का **हुलिया** नोट करना शुरू किया। अलाउद्दीन ने सबसे बडी **स्थायी सेना** (ह"म–ए–मुर्रत्तब) का गठन किया। **स्थाई सेना** का निर्माण करने वाला अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था। फरिश्ता के अनुसार केन्द्रीय सेना में 4,75,000 घुड.सवार थे। अलाउद्दीन ने मंगोलो की भॉति अपनी सेना को **दशमलव प्रणाली** पर संगठित करने की कोि"ा" की।

आर्थिक सुधार

बाजार नियंत्रण :– वित्तीय एवं राजस्व सुधारों में रूचि लेने वाला अलाउद्दीन पहला सुल्तान था। अलाउद्दीन के बाजार नियंत्रण की जानकारी **जियाउद्दीन बरनी** की **तारीख–ए–फिरोजशाही, अमीर खुसरो** की **खजाइन–उल–फुतुह,** इसामी की फुतुह–उस–सलातीन व इब्न बतूता के रेहला नामक ग्रन्थों से मिलती है। बरनी के अनुसार बाजार नियंत्रण का उद्देश्य कम खर्चे पर अधिक सेना रखना था। वास्तव में मंगोल आक्रमण से सुरक्षा हेतु आवश्यक एक वि"ाल सेना के रख–रखाव हेतु बाजार नियंत्रण प्रणाली को अपनाया गया। बाजार नियंत्रण के लिए निम्न अधिकारी नियुक्त किये गये –

1. **दीवाने रियासत**
2. **शहना–ए–मण्डी**
3. **बरीद–ए–मण्डी**

नाजिर याकूब को पहला दीवाने रियासत नियुक्त किया गया। मलिक कबूल को शहना–ए–मण्डी नियुक्त किया। सभी व्यापारियों को शहना–ए–मण्डी के कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवाना पडता था। अलाउद्दीन ने रा"ानिंग व्यवस्था लागू की तथा कालाबाजारी पर नियंत्रण किया।

तीन तरह के बाजार :–

1. **सराय–ए–अदल (न्याय का स्थान)**:– निर्मित वस्तुओं के निर्यात व विदे"ाा से आने वाले माल हेतु बाजार।
2. **खाद्यान्न बाजार**
3. **घोडों, मवेशियों व दासों के बाजार।**

अलाउद्दीन ने बहुत से अमीरों की भूमि, शासकीय कर्मचारियों, विद्वानों, धर्म शास्त्रियों को राज्य की ओर से दी गई भूमि, मिल्क, इद्रारात (पेंशन), इनाम व वक्फ के रूप में दी गई भूमि को वापिस लेकर खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया। उसने खूतों व जमींदारो के वि"ोषाधिकार छीन लिये। बरनी कहता है कि चौधरी, खूत व मुकद्दम घोडे पर नही बैठ सकते थे और न अच्छे वस्त्र पहन सकते थे।

बाजार नियंत्रण से संबंधित चार अधिनियम :–

- बाजार नियंत्रण का पहला अधिनियम खाद्यान्नों की कीमत निर्धारण से संबंधित था।
- दूसरे अधिनियमों का समूह कम कीमतों पर कपडे व किराना सामान प्राप्त करने से सबंधित था।

इन चीजों की खरीद फरोख्त के लिये **सराय अदल** नामक बाजार लगाया जाता था। बाजार नियंत्रण के तीसरे अधिनियमों का समूह मवे"ायों व दासों की खरीद फरोख्त से संबंधित था। अंतिम अधिनियम परवानामवीस (परमिट जारी करने वाला अधिकारी) की नियुक्ति से संबंधित था।

राजस्व व्यवस्था :– बिस्वा भूमि पैमाइ"ा की मानक इकाई थी। यह एक बीघा का बीसवॉ हिस्सा थी। उपज का आधा हिस्सा लगान खराज के रूप में लिया जाता था। अलाउद्दीन मुसलमानों से उपज का एक–चौथाई भूमिकर के रूप में लेता था। जबकि अन्य प्रजा से उपज का आधा हिस्सा भूमिकर लेता था। अलाउद्दीन भारत का प्रथम मुस्लिम शासक था जिसने भूमि की पैमाई"ा **मसाहत** कर वास्तविक आय पर राजस्व नि"चित किया। सरकारी कर्मचारियों द्वारा लगान वसूल करने की प्रथा अलाउद्दीन ने शुरू की। राजस्व नकद व अनाज दोनो के रूप में लिया जाता था। **घरीकर (आवासकर), चराई कर (दुधारू पशुओं पर)** तथा करी या करही भी अन्य कर थे जो अलाउद्दीन द्वारा पहली बार लगाए गए। खम्स नामक कर लूट में राज्य का पॉचवा हिस्सा होता था अलाउद्दीन ने 4/5 हिस्सा खम्स वसूल किया। मुहम्मद बिन तुगलक ने भी खम्स का 4/5 भाग राज्य कर के रूप में लिया। अलाउद्दीन ने बकाया राजस्व वसूल करने के लिए **'दीवान–ए–मुस्तखराज'** नामक विभाग की स्थापना की। इक्तादारी व्यवस्था बन्द कर दी व नकद वेतन देना शुरू किया।

विविध तथ्य :– **तस्बीह, तबरेज, कंज माबरी, खुज्जे दिल्ली** (दिल्ली में बना रे"ामी कपडा), **कमरबाद** आदि अलाउद्दीन के समय के बहुमूल्य वस्त्र थे। अलाउद्दीन ने कुतुबमीनार के पास **अलाई दरवाजे** का निर्माण करवाया। इसका गुम्बद प्रारम्भिक तुर्की कला का श्रेष्ठ नमूना है। अलाउद्दीन ने अमीर खुसरो व अमीर हसन देहलवी को संरक्षण प्रदान किया। **अमीर खुसरो** उसका **राजकवि** था। उसने **सीरी फोर्ट (दिल्ली)** का निर्माण व इसमें **हजार खम्भों** वाले **महल (हजार सितून)** का निर्माण किया। **अमीर खुसरो** ने बलबन से लेकर मुहम्मद बिन तुगलक तक **आठ** सुल्तानों का काल देखा। अल्प खॉ, उलुग खॉ, नुसरत खॉ और जफर खॉ अलाउद्दीन के चार वि"वसनीय खान सेनापति थे। बरनी की **तारीख–ए–फिरोजशाही** से हमें खिलजी वं"ा की जानकारी मिलती है। **बरनी** ने **छः सुल्तानों** का शासक काल देखा।

जनवरी, 1316 में अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद **मलिक काफूर** ने अलाउद्दीन के पुत्रों व परिवार के सभी सदस्यों की हत्या करवा दी। उसके सिर्फ एक पुत्र मुबारक खॉ को जीवित कैद कर लिया। मुबारक खॉ ने रि"वत देकर मलिक काफूर की हत्या करवा दी। मलिक काफूर ने इससे पहले कुछ समय के लिए ि"ाहाबुद्दीन उमर को गद्दी पर बैठाया। अलाउद्दीन की तुलना जर्मन राज्य के संस्थापक बिस्मार्क से की जाती है।